अन्तर्गृह

काशी में दो अन्तर्गृह यात्राएँ प्रचलित हैं - एक विश्वनाथजी की तथा दूसरी केदारेश्वर की। पहली का आधार काशीखण्ड है तथा दूसरी का ब्रह्मवैर्त्तपुराण। यह नित्य करने वाली यात्राएँ हैः

अन्तर्गृहस्य यात्रा वै कर्त्तव्या प्रतिवाससरम्।[२]

(अ) विश्वेश्वर की अन्तर्गृह यात्रा - यह यात्रा बहुत छोटी नही है, अतएव जो लोग सांसारिक प्रपंच से निवृत्त होकर काशीवास करते हैं, यह विशेषतः उनके लिए ही है। आजकल भी काशी में सैंकड़ो व्यक्ति ऐसे हैं, जो यह यात्रा नित्य करते हैं और जो लोग बाहर से काशीयात्रा को आते हैं, उनके लिए तो यह यात्रा आवश्यक ही मानी जाती है। इसमें विश्वेश्वर के अन्तर्गृह की प्रदक्षिणा कई आवरणों में होती हैं और तदुपरान्त माहात्म्यपूर्ण शिवायतनों, देवीपीठों तथा विनायकपीठों की एक क्रम से अर्चना होती है। यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व विश्वेश्वर के समीप के पाँचों विनायकों तथा विश्वेश्वर का पूजन होता है और मुक्तिमण्डप में यात्रा का संकल्प करके मणिकर्णिका-स्नान से यात्रा प्रारम्भ होती है। मणिकर्णीश्वर से आरम्भ करके पहले पर्वतेश्वर तक ईशान कोण में जाना होता है और फिर वहाँ से लौटकर ललिताघाट, मीरघाट, दशाश्वमेघघाट होते हुए अगस्त्यकुण्डा, जंगमबाड़ी, गोदई चौकी, ध्रुवेश्वर, गोकर्ण, हड़हा, राजादरवाजा, लखीजौतरा, पशुपतीश्वर, गोमठ, वीरेश्वरघाट, संकटा घाट, अग्नीश्वर घाट, भोंसला-मन्दिर और फिर संकटा घाट पर आकर वशिष्ठ वामदेव में प्रदक्षिण का प्रथम अंग समाप्त होता है। फिर, सीमाविनायक से प्रारम्भ होकर कई बार कई प्रकार के मोड़ लोती हुई यात्रा अन्त में विश्वेश्वर के मन्दिर में समाप्त होती है। इस यात्रा में ७७ देवस्थानों के दर्शन होते हैं और उनके नाम तथा क्रम काशीखण्ड[३] में निर्धारित हैं, जिनका पूरा विवरण नीचे दिया गया है। इस सम्बन्ध में यह स्मरण रखना है कि कम-से-कम आठ सौ वर्षों का परम्परा में यदा-कदा भ्रम अथवा परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक है। ये परिवर्तन यात्राक्रम में कहीं-कहीं दिख पड़ते हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी ईसवी के तृतीय किंवा चतुर्थ चरण में 'गुरुचरित्र' नामक मराठी भाषा में लिखा गया। इ स ग्रन्थ में अन्तर्गृह-यात्रा का जो वर्णन है, उसमें काशीखण्ड में कहे हुए क्रम से कुछ भेद है। यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व पंच-विनायक तथा विश्वेश्वर के पूजन के अतिरिक्त पांचालेश्वर का उल्लेख है, जो सम्भवतः पाँचों पाण्डेश्वरों की ओर संकेत करता है। 'कम्बलाश्वतरौ' के स्थान पर कमलेश्वर, हरिकेश बन के स्थान पर हरिहरेश्वर, कीकेसेश्वर के स्थान पर किंकरेश्वर, कलशेश्वर के बदल कल्लेश्वर, वीरेश्वर के स्थान पर विश्वेश्वर, विद्येश्वर के बदले विघ्नेश्वर, सीमाविनायक के स्थान पर सोमनाथ विनायक, ब्राम्हीश्वर के बदले ब्रह्मेश्वर, अप्सरेश्वर के स्थाप पर असुरेश्वर ये नामों में भ्रम हो गये हैं। पितामहेश्वर, करूणेश्वर, विशालाक्षी और प्रतिग्रहेश्वर के नाम छूट गये हैं। तथा सुरेश्वर और आनन्दभैरव के नाम बढ़ गये हैं। उसके अतिरिक्त ज्ञानवापी का उल्लेख गौणरूप में है, परन्तु ज्ञानेश्वर के पूजन का उल्लेख है। मुक्तिमण्डप का भी नाम आया है। इन परिवर्तनों को ध्यान से देखने पर इनके भ्रामात्मक होने की बात स्पष्ट हो जाती है। यात्री नये देश में आया था, अतः नामों में भ्रम हो जाना स्वाभाविक था, विशेषतः तीर्थपुरोहितों की वाणी भी दोषपूर्ण हो सकती थी। नित्ययात्रा में विस्वेश्वर के द्वार पर कालभैरव का उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। सम्भवतः, इन्हीं के लिए आनन्दभैरव का नाम कहा गया है। सुरेश्वर से क्या तात्पर्य था, यह नहीं कहा जा सकता, अन्यथा यात्रा क्रम प्राचीन ही था[३]।

प्रातः गंगा स्नान करके पंच विनायक तथा विश्वेश्वर के पूजन के पश्चात मुक्तिमण्डप में यात्रा का संकल्प करके मणिमर्णिका में जाकर स्नान करें। तदन्तर, सिद्धविनायक के दर्शन के बाद निम्नांकित क्रम से देव-दर्शन करें।

१. मणिकर्णेश्वर : मणिकर्णिका घाट के ऊपर, मका नं० सी० के० ८/१२।

२. कम्बलेश्वर : वहीं पर, मकान नं० सी० के० ८/१४ में कम्बलाश्वतरेश्वर नाम से।

३. अश्वतरेश्वर : वहीं पर, मकान नं० सी० के० ८/१४ में कम्बलाश्वतरेश्वर नाम से।

४. वासुकीश्वर : संकटा जी के दक्षिण। मकान नं० सी० के० ७/१५५।

५. पर्वतेश्वर : वहीं पर, मकान नं० सी० के० ७/५०।

६. गंगाकेशव : ललिताघाट। मकान नं० डी० २/६७ ।

७. ललिता देवी : वहीं पर मकान नं० डी० २/६७ ।

८. जरासन्धेश्वर : मीरघाट। मकान नं० डी० २/७१ ।

९. सोमेश्वर : मान मन्दिरघाट। मकान नं० डी० १६/३४ के पास।

१०. बाराहेश्वर : दशाश्वमेघ घाट। मकान नं० डी० १७/१११ ।

११. ब्रह्मेश्वर : बालमुकुन्द का चौहट्टा। मकान नं० डी० ३३/६६-६७ ।

१२. अगस्तीश्वर : अगस्त्यकुण्डा मुहल्ले में। मकान नं० डी० ३६/११ ।

१३. कश्यपेश्वर : जगमवाड़ी। मकान नं० डी० ३५/७७ ।

१४. हरिकेशेश्वर : वहीं पर, मकान नं० डी० ३५/२७३ के दक्षिण ।

१५. वैद्यनाथ : कोदई चौकी के पास। मकान नं० डी० ५०/२० ।

१६. ध्रुवेश्वर : मिसिपोखरा मुहल्ले में सनातन धर्म कालेज के पिछवाड़े कोने पर।

१७. गोकर्णेश्वर : कोदई की चौकी मुहल्ले में दयलू की गली में। मकान नं० डी० ५०/३४ ए के दक्षिण ।

१८. हाटकेश्वर : पुरानी गुदड़ी में।

१९. कीकेसेश्वर : हड़हा मुहल्ले में। मकान नं० सी० के० ४८/४५ ।

२०. भारभूतेश्वर : राजादरवाजा। मकान नं० सी० के० ५४/४४ के पूर्व ।

२१. चित्रगुप्तेश्वर : मछरहट्टा में मकान नं० सी० के० ५७/७७ ।

२२.	चित्रघण्टा देवी	: चौक में नन्दू नाऊ की गली में। मकान नं० सी० के० १३/६६ ।
२३.	पशुपतीश्वर	: पशुपतीश्वर मुहल्ले में। मकान नं० सी० के० १३/६६ ।
२४.	पितामहेश्वर	: कश्मीरीमल के हवेली के पीछे शीतला गली में। मकान नं० सी० के० ७/१२।
२५.	कलाशेश्वर	: नागरों की ब्रह्मपुरी में। मकान नं० सी० के० ७/१०६ ।
२६.	चन्द्रेश्वर	: सिद्धेश्वरी में । मकान नं० सी० के० ७/१२४ ।
२७.	आत्मावीरेश्वर	: संकटा घाट पर। मकान नं० सी० के० ७/१५८ ।
२८.	विद्येश्वर	: नीमवाली ब्रह्मपुरी में । मकान नं० सी० के० २/४१ ।
२९.	अग्नीश्वर	: आग्नीश्वर घाट के पास । मकान नं० सी० के० २/३ ।
३०.	नागेश्वर	: भोंसला-मन्दिर के पास। मकान नं० सी० के० १/२९ से सटे हुए ।
३१.	हरिशचन्द्रेश्वर	: संकटा घाट के ऊपर। मकान नं० सी० के० ७/१६६
३२.	चिन्तामणिविनायक	: वहीं पर, वशिष्ट आमदेव के द्वार पर। मकान नं० सी० के० ७/१६१
३३.	सेनाविनायक	: वहीं पर, हरीशचन्द्रेश्वर के सामने दीवार में, मढ़ी में।
३४.	वशिष्ठ	: वहीं पर
३५.	वामदेव	: वहीं पर
३६.	सीमाविनायक	: वहीं पर, सेनानिनायक के पास
३७.	करूणेश्वर	: ललिताघाट के ऊपर। मकान नं० सी० के० ३४/१०
३८.	त्रिसन्धयेश्वर	: वहीं पर, मकान नं० डी० १/४०
३९.	विशाल क्षीदेवी	: मीरघाट। मकान नं० डी० ३/८५



४०	धर्मेश्वर	: धर्मकूप में। मकान नं० डी० २/२९
४१	विश्वबाहुकी देवी	: वहीं पर, मकान नं० डी० २/१३
४२.	आशाविनायक	: मीरघाट में हनुमान जी के मन्दिर में। मकान नं० डी० ३/७९
४३.	विद्धादित्य	: मीरघाट पर। मकान नं० डी० ३/१६।
४४.	चतुर्वक्त्रेश्वर	: सकरकन्द गली में। मकान नं० डी० ७/१९।
४५.	ब्राह्मी	: वहीं पर, मकान नं० डी० ७/६।
४६.	मनः प्रकामेश्वर	: साक्षीविनायक के पास। मकान नं० डी० १०/५०।
४७.	ईशानेश्वर	: कोतवालपुरा में बाँसफाटक सिनेमा के पीछे में। मकान नं० सी० के० ३७/६७।
४८.	चण्डीचण्डीश्वर	: कालिका गली में। मकान नं० डी० ८/२७।
४९.	भवानीशंकर	: अन्नपूर्णाः मन्दिर की बगल के राम-मन्दिर में कालीजी और जगन्नाथ के बीच में।
५०.	ढुण्ढिराज	: प्रसिद्ध।



५१.	राजराजेश्वर	: ढुण्ढिराज गली में। मकान नं० सी० के० ३५/३३।
५२.	लांगलीश्वर	: खोबा बाजार में। मकान नं० सी० के० २८/४।
५३.	नकुलीश्वर	: अक्षयवट में। मकान नं० सी० के० ३५/२०।
५४.	परान्नेश्वर	: ढुण्ढिराज गली में दण्डापाणि-मन्दिर के सामने, मकान नं० ३५/३८।
५५.	मरदव्येश्वर	: ढुण्ढिराज गली में दण्डापाणि-मन्दिर के सामने, मकान नं० ३५/३८।
५६.	प्रतिग्रहेश्वर	: ढुण्ढिराज गली में दण्डापाणि-मन्दिर के सामने, मकान नं० ३५/३८।
५७.	निष्कलंकेश्वर	: ढुण्ढिराज गली में दण्डापाणि-मन्दिर के सामने, मकान नं० ३५/३८।
५८.	मार्कण्डेश्वर	: ढुण्ढिराज गली में दण्डापाणि-मन्दिर के सामने, मकान नं० ३६/१०।
५९.	अपरसेश्वर	: ज्ञानवापी मस्जिद की सीढ़ी के सामने खिड़की में छोटा शिवलिंग।
६०.	गंगेश्वर	: ज्ञानवापी के पूर्व पीपल के नीचे मूर्ति लुप्त है।
६१.	ज्ञानवापी में स्नान	: ज्ञानवापी प्रसिद्ध।



६२.	नन्दिकेश्वर	: ज्ञानवापी के उत्तर। मूर्ति लुप्त है।
६३.	तारकेश्वर	: गौरीशंकर के नीचे। मूर्ति लुप्त है।
६४.	महाकालेश्वर	: ज्ञानवापी के पूर्व पीपल के नीचे मूर्ति लुप्त है। विश्वनाथजी के मन्दिर में, पश्चिम के मन्दिर में पुनः स्थापना।
६५.	दण्डपाणि	: वहीं पर, ढुण्ढिराज गली में भी मन्दिर है। मकान नं०- सी० के० ३६/१०।
६६.	महेश्वर	: ज्ञानवापी के नैतृत्य कोण में, पीपल के नीचे।
६७.	मोक्षेश्वर	: वहीं पर, मूर्ति लुप्त है।
६८.	वीरभद्रेश्वर	: ज्ञानवापी के वायव्य कोण में। मूर्ति लुप्त है।
६९.	अविमुक्तेश्वर	: विश्वनाथजी के मन्दिर में। मस्जिद की सीढ़ी के सामने खिड़की बड़ा शिवलिंग।
७०.	पंचनायक	: ज्ञानवापी के पूर्व की गली में नेपालीखापड़े में चार और ढुण्ढिराज - गली में गणनाथ। मकान नं० सी० के० ३१/१२, ३१/१६, ३४/६०, ३५/८ और ३७/१ ।
७१.	विश्वेश्वर	: प्रसिद्ध ।



यही सारी यात्रा मौन होकर करनी चाहिए। यात्रा के अन्त में विश्वेश्वर का पूजन स्तवन, क्षमापराधन इत्यादि करके अपने घर को जाना होता है। वर्तमान यात्राक्रम में भवानी शंकर (ऊपर क्रम-संख्या ४९) की पूजा के बाद अन्नपूर्णाजी की भी पूजा होती है और ढुण्ढिराज का पूजन तदुपरान्त किया जाता है। सोमेश्वर (क्रम-संख्या ९) के बाद दाल्भ्येश्वर का पूजन भी होने लगा है।

(आ) केदारेश्वर की अन्तर्गृह-यात्रा - इस इन्तर्गह की सीमाएँ इस प्रकार ब्रह्मवैवर्तपुराण में कही गई है। पूर्व में गंगाजी के मध्यभाग, तक, आग्नेय कोण में आधे कोश (अर्थात २००० गज या लगभग १८१८ मी० तक), दक्षिण में लोलार्क तक, नैऋत्य कोण में शंखोद्धार तीर्थ तक, पश्चिम में वैद्यनाथ तक, वायव्य कोण में लक्ष्मीकुण्ड तक, उत्तर में शूलटंकेश्वर तक और ईशान कोण में आधेकोश तक। इस अन्तर्गृह में जितने देवस्थान पड़ते हैं, उन सभी के दर्शन-पूजन का क्रम इस यात्रा में है। यह यात्रा पहले हरिश्चन्द्र घाट पर स्नान करके प्रारम्भ होती थी, परन्तु वहाँ श्मशान हो जाने से तथा केदारेश्वर का स्थान बदलाने से अब केदार घाट पर (आदिमणिकर्णिका में) स्नान करके और केदारजी के मन्दिर में वर्तमान देवताओं के पूजन से प्रारम्भ होती है और सभी देवताओं के दर्शन-पूजन के उपरान्त पुनः आदिमणिकर्णिका में स्नान तथा केदार के दर्शन-पूजन से समाप्त होती है। इ स यात्रा में निम्नांकित देवताओं के दर्शन आजकल प्रचलित है -

केदारघाट -

ाकर्णिका : केदारघाट।

र : प्रसिद्ध



: केदार-मन्दिर में।

ा : केदार-मन्दिर में।

: केदार-मन्दिर में।

: केदार-मन्दिर में।

: केदार-मन्दिर में।

८.	पार्वती	: केदार-मन्दिर में।
९.	दक्षिणामूर्ति	: केदार-मन्दिर में।
१०.	चण्डगण	: केदार-मन्दिर में।
११.	इन्द्रद्युम्नेश्वर	: केदार-मन्दिर में।
१२.	कालंजर	: केदार-मन्दिर में।
१३.	रनादकैश्वर	: केदार-मन्दिर में।
१४.	दधीचीश्वर	: केदार-मन्दिर में।
१५.	नीलकण्ठेश्वर	: मकान नं० बी० ६/१९।
१६.	गौरीकुण्ड	: केदारघाट पर।
१७.	हरम्पापतीर्थ तथा हरम्पापेश्वर	: घाट पर ही।
१८.	किरातेश्वर	: जयन्तेश्वर के समीप लाली घाट पर।

केदारजी के समीप -

१९. लम्बोदर विनायक	: चिन्तामणि विनायक नाम से प्रसिद्ध। लाली घाट के ऊपर सड़क पर।
२०. शत्रुघ्नेश्वर	: लच्छूजी की धर्मशाला के समीप। हनुमान घाट पर।
२१. भरतेश्वर	: काशीनाथ शास्त्री के मकान में हनुमान घाट पर।
२२. लक्ष्मणेश्वर	: अनन्य शास्त्री के मकान में। हनुमान घाट पर।
२३. रामेश्वर	: हनुमानजी के मन्दिर के घेरे में। हनुमान घाट पर।
२४. सीतेश्वर	: वहीं नीम की जड़ में। हनुमान घाट पर।
२५. हनुमदीश्वर	: वहीं समीप में। हनुमान घाट पर।
२६. रूरूभैरव	: घाट किनारे। हनुमान घाट पर।

२७. स्वप्नेश्वर : बादशाहगंज, शिवाला ।

२८. स्वप्नेश्वर : वहीं।

२९. अक्रूरेश्वर : अक्रूर घाट, भदैनी।

भदैनी में -

३०. चामुण्डा देवी : लोलार्क के समीप। अर्कविनायक के मन्दिर में।

३१. चर्ममुण्डा देवी : वहीं समीप। अज्ञात।

३२. महारूण्डा देवी : वहीं। अब लुप्त।

३३. करन्धमेश्वर : वहीं।

३४. अर्कविनायक : लोलार्क के समीप।

३५. पराशरेश्वर : मठ में। मकान नं० बी० २/२१।

३६. उद्दालकेश्वर : समीप में।

३७. अमरेश्वर : लोलार्क कुण्ड के पास। मकान नं० बी० २/२०।

३८. कुण्डोदरेश्वर : वहीं। अस्सीघाट पर बालू में दबे हुए।

३९. लोलार्ककुण्ड : प्रसिद्ध।

४०. लोलार्कादित्य : प्रसिद्ध। कुण्ड पर आले में।

४१. शुष्केश्वर : दुर्गाकुण्ड के नैऋत्य कोण में।

४२. जनकेश्वर : सुकुलपुर में।

४३. असी-संगम : प्रसिद्ध।

४४. असी-संगमेश्वर : वहीं, मकान नं० बी० १/१७७।

कुरुक्षेत्र मुहल्ले में -

४५. सिद्धेश्वर : प्रसिद्ध। मकान नं० बी० २/२७२।

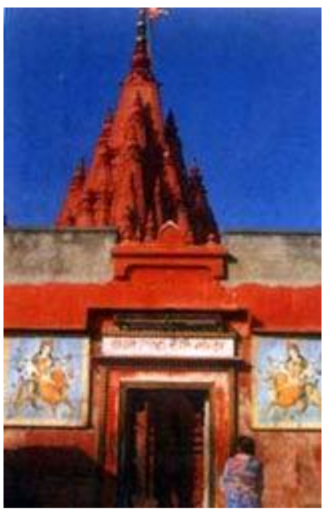
४६. सिद्धेश्वरी देवी : प्रसिद्ध। मकान नं० बी० २/२७२।

४७. स्थाणु : कुरुक्षेत्र तालाब पर। मकान नं० बी० २/२४७।

४८. कुरुक्षेत्रतीर्थ : प्रसिद्ध दुर्गाकाण्ड के समीप।

दुर्गाकाण्ड -

४९ दुर्गाकुण्ड तीर्थ : प्रसिद्ध। दुर्गाजी के घर में।





५०. दुर्गविनायक : वहीं।

५१. दुर्गादेवी : प्रसिद्ध।



५२. कालरात्रि	: वहीं।
५३. चण्डभैरव	: वहीं।
५४. द्वारेश्वर	: वहीं।
५५. शूर्पकर्णेश्वर	: वहीं।
५६. कुक्कुटेश्वर	: वहीं।
५७. जांगलीश्वर	: वहीं।
५८. तिलपर्णेश्वर	: वहीं, जिस मन्दिर के सामने बलि प्रदान होता है।
५९. मुकुटेश्वर	: गोवाबाई का मन्दिर, समीप पर ही मुकुटकुण्ड नवाबगंज।
६० बराका देवी	: नवाबगंज मुकुटकुण्ड पर पँचकौड़ी देवी के नाम में प्रसिद्ध।

शंखधारा मुहल्ला -

६१. शंखोद्धार तीर्थ	: शंखूधारा कुण्ड।
६२. द्वारकानाथ	: वहीं।
६३. द्वारकेश्वर	: वहीं।

६४. शंकुकर्णेश्वर : वहीं। मकान नं० बी० २२/१२० के सामने।

वैजनत्था मुहल्ला -

६५. वैद्यनाथ : प्रसिद्ध वैजनत्था नाम से।

कमच्छा मुहल्ला -

६६. कहोलेश्वर : वैजनत्था के समीप।

६७. कामाक्षा देवी : प्रसिद्ध।

६८. क्रोधन भैरव : वहीं।

६९. बटुकभैरव : वहीं, प्रसिद्ध।

७०. घण्ेश्वर : बटुकभैरव के पास।

७१. ब्रह्मपदपदेश्वर : वहीं।

लक्सा मुहल्ला -

७२. लवेश्वर : रामकुण्ड के समीप। मकान नं० डी० ५३/४८।

७३. कुशेश्वर : वहीं।

७४. रामकुण्ड : प्रसिद्ध।

७५. रामेश्वर : वहीं। मकान नं० जी० ५४/११५।

लक्ष्मीकुण्ड - मुहल्ला

७६. करबीरेश्वर : प्रसिद्ध। मकान न० डी० ४२/४९।

७७. महालक्ष्मीश्वर : नृसिंह बाबू बंगाली के मकान में।

७८. लक्ष्मीकुण्ड तीर्थ : प्रसिद्ध

७९. कूणिताक्ष विनायक : वहीं। मकान नं० डी० के ५२/३८।

८०. महालक्ष्मी : प्रसिद्ध। मकान नं० डी० के ५२/४०।

८१. महाकाली : वहीं।

८२. महासरस्वती : वहीं

८३. शिखिचण्डी : वहीं।

८४. उग्रेश्वर : वहीं।

दशाश्वमेघ

८५. रूद्रसरोवर तीर्थ : गंगाजी में दशाश्वमेघ घाट पर।

८६. शूलटंकेश्वर : प्रसिद्ध।

८७. दशाश्वमेघतीर्थ : दशाश्वमेघ घाट।





८८. बन्दी देवी	:	मकान नं० १७/१०० में।
८९ दशाश्वमेघेश्वर	:	शीतलाजी के मन्दिर में।
९०. गोव्याघ्रेश्वर	:	समीप
९१. मानधात्रीश्वर	:	मकान नं० सी० के० ३४/१४ में
९२. चौसट्ठी देवी	:	चौसट्ठी घाट पर प्रसिद्ध।
९३. वक्रतुण्ड विनायक	:	सरस्वतीविनायक नाम से प्रसिद्ध, राणामहल के समीप। मकान नं० डी २०/४।

बंगाली टोला

९४. पालालेश्वर	:	मकान नं० डी० ३२/११७ के द्वार पर।
९५. सिद्धेश्वर	:	समीप में।
९६. नैऋतेश्वर	:	पुष्पदन्तेश्वर के समीप।
९७. हरिश्चन्द्रेश्वर	:	वहीं।
९८. अंगिरसेश्वर	:	हरिकेशेश्वर के पास जंगमबाड़ी में।
९९. पुष्पदन्तेश्वर	:	मकान नं० डी० ३२/१०२ में।
१००. एकदन्त विनायक	:	वहीं। फाटक पर।
१०१. गरुड	:	मकान नं० डी० ३१/३९ ए देवनाथपुरा में।
१०२. गरुड़ेश्वर	:	देवनाथपुरा में। मकान नं० डी० ३१/३९ में।
१०३. सर्वेश्वर	:	बबुआ पाण्डे घाट के ऊपर।
१०४. सोमेश्वर	:	समीप में।

नारद घाट

१०५. नारदेश्वर : तैलंगमठ नारदमठ नारदघाट। ाकान नं० डी० २५/१२ में।

१०६. अवभ्रातकेश्वर : विभ्राटकेश्वर नाम से प्रसिद्ध।

१०७. अत्रीश्वर : मकान नं० डी० २५/११ नारद घाट पर।

१०८. अनसूया देवी : मकान नं० डी० २५/११ नारद घाट पर।

१०९. अनसूयेश्वर : मकान नं० डी० २५/११ नारद घाट पर।

मानसरोवर मुहल्ला

११०. मानसरोवर तीर्थ : प्रसिद्ध। लुप्त।

१११. मानसरोवेश्वर : मानसरोवर मुहल्ले में मकान नं० बी १४/२१ के सामने।

११२. सुराभाण्डेश्वर : तिलाभाण्डेश्वर नाम से प्रसिद्ध।

डोड्यिाबीर मुहल्ला

११३. विभाण्डेश्वर :

११४. कहोलेश्वर (द्वितीय) :

११५. नर्मदेश्वर :

११६. सुरेश्वर :

११७. पद्मसुरेश्वर :

क्षेमेश्वर घाट

११८. क्षेमेश्वर : क्षेमेश्वर घाट। मकान नं० बी० १४/१२।

११९. चित्रांगदेश्वर : कुमारस्वामी मठ में। मकान नं० बी० १४/११८

१२०. चित्रांगदेश्वरी देवी : वहीं। मकान नं० बी० १४/११८।

१२१. रूक्मांगदेश्वर : चौकीघाट के ऊपर।

केदार घाट

१२२. अम्बरीषेश्वर : केदार-मन्दिर में।

१२३. तारकेश्वर : केदारघाट पर बुर्जी के नीचे।

१२४. आदिमणिकर्णिका : केदारघाट।

१२५. केदारेश्वर : प्रसिद्ध।



(ई) आंकारेश्वर की अन्तर्गृहयात्रा - विश्वेश्वर तथा केदारेश्वर की अन्तर्गृहयात्राओं के अतिरिक्त वाराणसी में ओंकारेश्वर की भी अन्तर्गृहयात्रा प्राचीनकाल से होती रही है। परन्तु, इधर साठ-उत्तर वर्षों से इसमें शैथिल्य आने लगा और वर्तमान काल में इस यात्रा का सांगोपांग विधान जानेवाले कोई नहीं हैं। काल के प्रभाव से इस विवरण में भी कुछ त्रुटियाँ आ गई हैं, जिनका निराकरण तभी सम्भव होगा, जब इसके सम्बन्ध का पौराणिक विर्णन मिल जाय, जो अभी तक नहीं मिल पाया है।

निम्नांकिल वर्णन में मुख्य त्रुटि यह आ गई है कि इ सके अनुसार ओंकारेश्वर की पूरी प्रदक्षिणा हो जाती है, जो होनी चाहिए। शिवस्यार्धप्रदक्षिणा-यात्रा-क्षेत्र की सीमाएँ तो ठीक हैं, परन्तु क्रम में किसी प्रकार त्रुटि का समावेश हो गया है। क्षेत्र का बहुत बड़ा भाग मुसलमानी मुहल्लों में पड़ता है। त्रुटियों का यह भी एक कारण है कि बहुत से शिवलिंग अपने स्थान से हटकर अन्यत्र आ गये हैं।

यात्रा मत्स्योदरी तीर्थ से प्रारम्भ होती है, जहाँ अब स्नान असम्भव होने से केवल मार्जन-आचमन किया जाता है। यहाँ से सीधी सड़क से ओंकारेश्वर को जाते हैं। ओंकारेश्वर में संकल्प करके देवताओं का पूजन प्रारम्भ होता है, जिसका क्रम नीचे दिया ज रहा है। ओंकारेश्वर के समीप के तीर्थों का पूजन करन के बाद उनके पूर्व के मार्ग से सीधे उत्तर जाकर भारद्वाजी टोल होते हुए प्रह्लाद घाट पहुँचते हैं और वहाँ से गंगातट से दक्षिण-पश्चिम चलकर रामघाट के आगे अग्नीश्वरघाट (वर्तमान नाम नया घाट) से ऊपर चढ़कर गोल गलीवाले मार्ग के बीच से सिद्धेश्वरी देवी के मन्दिर को बायें छोड़ते हुए कश्मीरीमल की हवेली की बगल से पशुपतीश्वर की गली में घुसते है। सिद्धेश्वरी देवी का मन्दिर

विश्वेश्वर अन्तर्गृह में पड़ता है। पशुपतीश्वर गली से नीचे ढाल उतरकर पं० अंजनिनन्दन मिश्र के घर के पास से दाहिनी ओर लक्खीचौतरा की गली में जाकर थोड़ी दूर चलने पर ठीक लक्खीचौतरा की बगल से दाहिने घूमकर बाई ओर चन्द्रघण्टा की गली में सीढ़ी चढ़कर जाते हैं और वहाँ से बड़ी सड़क पर निकलते हैं। वहाँ से मैदागिन का बगीचा दाहिने छोड़ते हुए मध्यमेश्वर वृद्धकाल, कालभैरव होकर पुनः चन्द्रघण्टा की गली के पश्चिमी छोर पर पहुँचते हैं। (इस स्थान पर कुछ त्रुटि है क्योंकि मध्यमेश्वर, वृद्धाकाल होकर कालभैरव और वहाँ पुनः चौक में आने से रास्ता कट जाता है। यही बड़ी सड़क से टाउन हाल के पिछवाड़े से पहले कालभैरव होकर तब वृद्धाकाल की ओर जायें, तो यह त्रुटि मिट सकती है।) वहाँ से गोविन्दपुरा में घुसकर मछरहट्टा फाटक के भीतर से बाई गली में घुसकर गुदड़ीबाजार की ओर निकलते हैं। वहाँ से दाहिने घूमकर काशीपुरा की सड़क से बेतिया की कोठी के पास से सप्तसागर में घुसते हैं और ज्येष्ठेश्वर इत्यादि का पूजन करके पुनः उसी मार्ग से बेतिया की कोठी की चौमुहानी पर आते हैं। वहाँ से बड़ी पियरी की सड़क से कबीरचौरा से बेतिया कोठी जानेवाली सड़क पर पहुँचकर, दाहिने मुड़ कर बरनवाल धर्मशाला की बगल से औघड़नाथ की तकिया होते हुए झण्डातले निकलते हैं और वहाँ से मिडिल स्कूल के सामने छोठी पिसनहरिया का कुआँ बायें छोड़ते हुए नाटी इमली की सड़क पर होते हुए इसरगंगी जाते हैं। वहाँ से डिगिया मुहल्ले से होते हुए नागकुआँ जाते हैं और फिर बागेश्वरी तथा सिद्धेश्वरी होकर पुनः नागकुआँ को बायें छोड़ते हुए मड़ियाघाट जाते हैं। वहाँ के देवताओं का पूजन करके वहीं शैलपुत्री दुर्गा के मन्दिर में रात्रिवास करते हैं।

सशक्त लोग यात्रा आगे भी चलाते रहते हैं और एक ही दिन में उसे पूरी कर लेते हैं। शैलपुत्री से वरणा तट पर चलकर पुल पर से इसी पार उतरकर कपाल-मोचन होते हुए बड़ी सड़क पर (ग्राण्डटंक रोड) आते ही सीधे पापमोचन (नौआ पोखरा) तीर्थ जाते हैं। वहाँ से बलुआवीरवाले मार्ग से हनुमानफाटक पहुँचने के पहले ही ऋणमोचन तीर्थ आदि का प्रदर्शन करते हुए हनुमान-मन्दिर को बायें छोड़कर चौमुहानी से पीली कोठी के समीप धनेसरा मठ में और वहां से गोलगढडा में विश्वकर्मेश्वर का दर्शन कर कपालमोचन तीर्थ जाते हैं। वहाँ से बड़ी लाइन के नीचे से दाहिने मुड़कर ऐतरणी-वैतरणी की बगल से छुतहा अस्पताल होते हुए सड़क पर आत आतें और सड़क के किनारे-किनारे वरणा-संगम और वहाँ से स्वर्लीनेश्वर तथा प्रह्लादेश्वर होते हुए पुनः ओंकारेश्वर पर जाकर यात्रा स्माप्त करते हैं। (कपालमोचन तीर्थ से बड़ी लाईन के नीचे से मुड़ने के कारण यहाँ पर ओकारेश्वर का सोमसूत्र कट जाने की त्रुटि होती है। कपालमोचन से उलटे लौट कर हनुमानफाटक होते हुए पुनः ओंकारेश्वर के पश्चिम की सड़क से लौट कर पुनः उनके पूर्व के मार्ग से उत्तर जाकर कपालमोचन के पास से दाहिने बड़ी लाईन के नीचे ऐतरणी-वैतरणी इत्यादि जाने से यह त्रुटि मिट सकती है। परन्तु, यथार्थ बात पौराणिक वर्णन मिलने पर ही कही जा सकती है, जो अभी तक नहीं प्राप्त हो सकी है।)

यात्रा में पूजनीय देवताओं का क्रम इस प्रकार है -

१.	शूलेश्वर	:	ओंकारेश्वर के अकार-मन्दिर के दक्षिण पेड़ की जड़ में चौखूटें अर्घेवाला शिवलिंग।
२.	नामदेश्व	:	उसी पेड़ में पीछे की तरफ बिना अर्घे का लेटा हुआ शिवलिंग।
३.	बिन्दवीश्वर	:	नादेश्वर के समीप का आधा फटा हुआ शिवलिंग।
४.	अकाररूपात्मन ओंकारेश्वर	:	वहीं अकार का प्रसिद्ध शिवलिंग।
५.	उकारूपात्मन ओंकारेश्वर	:	ओंकारेश्वर के टीले के दक्षिण मकार नाम से प्रसिद्ध शिवलिंग।
६.	मकाररूपात्मन	:	टीले के ऊपर ओंकारेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवलिंग।

७.	तारतीर्थ (कपालमोचनतीर्थ)	:	ओंकारेश्वर टीले के पश्चिम सटा हुआ सूखा तालाब, जो अब पाटा जा चुका है।
८.	शुभोदकूप	:	टीले के पूर्व का कुआँ।
९.	श्रीमुखीगुहा	:	टीले के नीचे लुप्त। उसका द्वार श्रमोदक कूप के भीतर गर्मियों में दीख पड़ता है।
१०.	गर्गेश्वर	:	श्रमोदक कूप के पूर्व में पेड़ के नीचे। अब लुप्त ।
११.	दमनकेश्वर	:	प्रसिद्ध मकार-मन्दिर के द्वार के सामने मढ़ी में।
१२.	प्रह्लादकेशव	:	प्रह्लाद घाट पर प्रसिद्ध (मकान नं० ए० १०/८०)
१३.	प्रह्लादेश्वर	:	वहीं उसी मन्दिर में प्रसिद्ध।
१४.	वीरेश्वर संस्थानगू	:	वीरेश्वर का प्राचीन स्थान। प्रह्लादेश्वर के उत्तर में।
१५.	पिलिपिल तीर्थ	:	त्रिलोचनघाट पर गंगा जी में।
१६.	त्रिलोचनेश्वर	:	त्रिलोचनघाट के ऊपर प्रसिद्ध (ए० २/८०)
१७.	अरुणादित्य	:	त्रिलोचन-मन्दिर में।
१८.	बाल्मीकीश्वर	:	त्रिलोचन मन्दिर में।
१९.	महादेव	:	त्रिलोचन के पिछवाड़े आदिमहादेव नाम से प्रसिद्ध।
२०.	नरनारायणकेशव	:	महथाघाट के ऊपर बदरीनारायण नाम से प्रसिद्ध।
२१.	उद्दालकेश्वर	:	राजमन्दिर में रामचन्द्रजी के मन्दिर की बगल की कोठरी में। (मकान नं० के० २०/१५९)
२२.	कपलेश्वरगुहा	:	कपिलेश्वर गली में मकान नं के० २९/१२ में।
२३.	बिन्दुमाधव	:	पंचगंगा घाट पर ऊपर प्रसिद्ध (के० २२/३३)।
२४.	धूतपापेश्वर	:	पंचगंगा घाट पर पुश्ते पर।
२५.	किरणेश्वर	:	लुप्त।

२६. हनुमदीश्वर	:	रामघाट पर कालविनायक के सामने के मकान में।
२७. मध्यमेश्वर	:	मैदागिन के उत्तर मकान नं० के० ५४/६३)।
२८. मत्स्यीश्वर	:	दारानगर में मृत्युंजय नाम से प्रसिद्ध (के० ५२/३९)।
२९. मातलीश्वर (मालतीश्वर)	:	वृद्धाकाल-मन्दिर में (के० ५२/३९)।
३०. वृद्धकालेश्वर	:	वृद्धकाल-मन्दिर में (के० ५२/३९)।
३१. महाकालेश्वर	:	वहीं।
३२. दक्षेश्वर	:	वहीं।
३३. बलीश्वर (बन्दीश्वर)	:	वहीं।
३४. बलीश्वर कुण्ड	:	गड़ही मुहम्मद शहीद (लुप्त)
३५. महाकालकुण्ड	:	दुहड़ीगड़ही।
३६. जयन्तेश्वर	:	वृद्धकाल-मन्दिर (के० ५२/३९) में ।
३७. अन्तकेश्वर	:	वहीं।
३८. हस्तिपालेश्वर	:	वहीं।
३९. ऐरावतेश्वर	:	वहीं।
४०. ऐरावतकुण्ड	:	वृद्धाकाल के छोर के द्वार के आग्नेय कोण में लुप्त।
४१. विष्वकसेनेश्वर	:	वृद्धकाल-मन्दिर (के० ५२/३९) में ।
४२. कृत्तिवासेश्वर	:	आलमेगीरी मस्जिद में स्थान-पूजन।
४३. कत्तिवासेश्वर	:	रत्नेश्वर के समीप बगीचे में (के० ४६/२३)
४४. हंसतीर्थ	:	हरतीरथ का पोखरा।
४५. रत्नेश्वर	:	वृद्धाकाल की सड़क पर (के० ५३/४०)।
४६. दाक्षायिणीश्वर	:	समीप में, मकान नं. के. ४६/३२ में।

४७. अम्विकेश्वर	:	वहीं समीप में। मकान नं. के. ५३/३८ में।
४८. ऋणहरेश्वर	:	वहीं समीप में।
४९. कालकूप	:	दण्डपाणिभैरव के मन्दिर में (के. ३१/४९)।
५०. कालेश्वर	:	वहीं (के. ३१/४९)।
५१. कालराज (कालभैरव)	:	समीप में प्रसिद्ध (के. ३२/२२)।
५२. जैगीष्व्येश्वर	:	सप्तसागर मुहल्ले में (पुनः स्थापना)।
५३. व्याघ्रेश्वर	:	वहीं (के. ६३/१६)।
५४. कुन्दकेश्वर	:	वहीं (के. ६३/२९)।
५५. देवकेश्वर	:	वहीं।
५६. शतकालेश्वर	:	वहीं।
५७. हेतुकेश्वर	:	वहीं।
५८. तक्षककुण्ड	:	लुप्त।
५९. तक्षकेश्वर	:	औघड़नाथ की तकिया के समीप। पुनः स्थापना।
६०. वासुकीश्वर	:	वहीं तक्षकेश्वर के सामने सड़क पार। पुनः स्थापना।
६१. वासुकिकुण्ड	:	लुप्त।
६२. ईश्वरगंगा	:	इसरगंगी का तालाब प्रसिद्ध।
६३. जैगीष्व्यगुहा	:	नरहरिपुरा, मकान नं. जे. ६६./३।
६४. जैगीष्व्येश्वर	:	वहीं।
६५. अग्नीध्रेश्वर	:	वहीं जागेश्वर नाम से प्रसिद्ध (जे. ६६/४)।
६६. कर्कीटकवापी	:	नागकुआँ प्रसिद्ध (जे. २३/२०६) जलमग्न
६७. कर्कोटक नाग	:	वहीं।

६८.	कर्कोटकेश्वर	:	वहीं।
६९.	वागीश्वरीवापी	:	बागेश्वरी नाम से प्रसिद्ध (जे.६/३.३)।
७०.	वागीश्वरीवापी	:	वहीं लुप्त।
७१.	सिद्धवापी	:	समीप में लुप्त। परन्तु, कूप मकान नं. जे.६/८४ के समीप वर्त्तमान।
७२.	सिद्धेश्वर	:	वहीं (जे. ६/८४)।
७३.	ज्वरहरेश्वर (जराहरेश्वर?)	:	वहीं (जे. ६/८४)।
७४.	आम्नातकेश्वर (सोसेश्वर)	:	वहीं (जे. ६/८४)।
७५.	सिद्धगण	:	वहीं। लुप्त।
७६.	शैलेश्वर	:	मढ़ियाघाट पर वरणा के तट पर।
७७.	शैलेश्वरी	:	शैलपुत्री दुर्गा नाम से प्रसिद्ध वहीं मढ़िया घाट पर।
७८.	वरणा नदी	:	वहीं मढ़िया घाट पर मार्जन।
७९.	पापमोचन तीर्थ	:	पठानी टोल के पास नौआ पोखरा नाम से प्रसिद्ध।
८०.	पापमोचनेश्वर	:	वहीं पोखरे के पास।
८१.	ऋणमोचन तीर्थ	:	लड्ड गड़हा के समीप में।
८२.	अंगारेश्वर	:	ऋणमोचन और ग्वालगड़हे के बीच में दक्षिणवाले मन्दिर में।
८३.	घनदेश्वर	:	पीली कोठी के पास बाबा निसिंहदास के मठ में (जे ४/९१)
८४.	हलीशेश्वर	:	वहीं।
८५.	घनदेश्वर तीर्थ	:	घनेसरा ताल।
८६.	विश्वकर्मेश्वर	:	स्ट्रीथफील्ड रोड पर मकान नं. ए. ३४/६१ में)

८७. कपालमोचन तीर्थ (भैरवतीर्थ)	:	लाटभैरव के पास।
८८. नौभैरव	:	वहीं लाटभैरव के पास।
८९. कपालेश्वर	:	वहीं।
९०. ऐतरणी	:	समीप में प्रसिद्ध।
९१. वैतरणी	:	वहीं प्रसिद्ध।
९२. वरणा-संगम	:	प्रसिद्ध।
९३. संगमेश्वर	:	आदिकेशव के पास नीचे के मन्दिर में।
९४. संगमेश्वर	:	आदिकेशव के पास नीचे के मन्दिर में।
९५. प्रयागलिंग	:	वहीं संगमेश्वर-मन्दिर में।
९६. शान्दिकरीगौरी	:	वहीं संगमेश्वर के पूर्व।
९७. केशवादित्य	:	आदिकेशव मन्दिर में दीवार में।
९८. आदिकेशव	:	प्रसिद्ध वरणा-संगम पर।
९९. ज्ञानकेशव	:	वहीं।
१००. वेदेश्वर	:	आदिकेशव के द्वार पर कोठरी में।
१०१. नक्षत्रेश्वर	:	वहीं वेदेश्वर के पास।
१०२. दण्डीश्वर	:	वहीं।
१०३. तुंगेश्वर	:	वहीं।
१०४. गजतीर्थ	:	आदिकेशव के पीछे। लुप्त।
१०५. भैरवतीर्थ	:	लुप्त।
१०६. स्वर्लीनेश्वर	:	प्रह्लादघाट के समीप। नया महादेव नाम से प्रसिद्ध। (ए. ११/१२)